कर्म ही हमारी निजी पूंजी :– बी.के. रूक्मणी

गुरू अंधकार से हमें प्रकाश की ओर ले जाने वाला होता है और सद्गुरू आत्मा को परमात्मा से मिलाता है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के स्थानीय सेवाकेंद्र विश्व सद्भावना भवन में भारत के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की जन्म जंयती पुष्प अर्पण कर व दीप प्रज्वलित कर मनाया गया। कार्यक्रम में अतिथि के रूप में नगर निगम महापौर राजकिशोर प्रसाद जी एवं महाविद्यालय भैंसमा के प्रोफेसर के.एन. टण्डन जी तथा बी.डी.एस. स्कूल बाल्को के प्राचार्या नीलम सिंह, शासकीय विद्यालय जमनीपाली की स्वाति शर्मा, स्थानीय संस्था प्रभारी बी.के. रूक्मणी दीदी साथ ही गेवरा सेवाकेंद्र प्रभारी बी.के. ज्योति दीदी उपस्थित थीं। इस अवसर पर राजकिशोर प्रसाद जी ने कहा कि डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जी एक ऐसी विभूति थे जिन्होने अपने जन्मदिवस को गुरूजनो के सम्मान में समर्पित कर दिया। शिक्षक चाहे शासकीय, अशासकीय या प्राईवेट स्कुलो का हो शिक्षको का ऋण हमेशा लोगो पर बना रहता है जिसे चुकाया नही जा सकता है। महाविद्यालय भैंसमा के प्रोफेसर के.एन. टण्डन ने कहा कि समय के साथ कुछ बदलाव भी आया हैं। पहले गुरू कहकर संबोधित करने में आंतरिक खुशी मिलती थी। आज की पीढ़ी उसे शिक्षक कहती है। उन्होने कहा कि गुरू के बिना जीवन के लक्ष्य तक पहुंचा नही जा सकता। वही होता है जो हमारा सही मार्ग प्रशस्त करता है। बी.डी.एस. स्कूल बाल्को के प्राचार्या नीलम सिंह ने कहा कि हमारे विद्यालय में पढ़ाई के साथ साथ आध्यात्मिकता का ज्ञान दिया जाता है जिससे बच्चों की मानसिक शक्तियों का विकास होता रहें। बच्चो को ज्यादातर मोबाईल से दूर रहने की बात कही। साथ ही उन्होने अभिभावकों से भी कहा कि बच्चो को संस्कारवान बनाने में उनका भी अहम रोल होता हैं और कहा कि ब्रह्माकुमारी आश्रम में आध्यात्मिकता की शिक्षा से बच्चो को सर्वांगीण विकास होगा और हमारा देश आगे बढ़ेगा। सभी को यहॉ आकर आध्यात्मिकता शिक्षा लेने की अपील की। संस्था प्रभारी ब्रह्माकुमारी रूक्मणी दीदी ने कहा कि परमपिता परमात्मा परमशिक्षक, परमसद्गुरू है जो हमें सत्य ज्ञान देते है और जब हम प्रतिदिन ज्ञान साबुन से आत्मा को स्नान कराते है तो फिर वो मनुष्यात्मा से देवात्मा बनने लगती है। सहज ही जीवन में दिव्य गुणो को धारण करने की शक्ति आ जाती है। परमपिता परमात्मा हमें सत्य ज्ञाने दे रहे है एक बार समय चले जाने के बाद पुनः वापिस नही आता। उन्होने कहा कि एक तिनका भी हमारे साथ नही जाने वाला। हमारे कर्म ही हमारी निजी पूंजी है जो हमारे साथ जाती है। और सत्य ज्ञान से ही हमारे कर्म श्रेष्ठ बनते है तो आप सभी अपने जीवन का अमूल्य समय निकाल कर यहॉ आकर मेडिटेशन अवश्य सीखे। अंत में बी.के. ज्योति दीदी ने सभी को शांति की अनुभूति कराई। समस्त शिक्षकों का अतिथियों द्वारा श्रीफल व ईश्वरीय स्लोगन भेंटकर सम्मानित किया गया। कार्यक्र में संस्था की ओर से रामा कर्माकर ने शिक्षको के सम्मान में स्वागत गीत गााकर अपने भाव व्यक्त किये। साथ ही नूतन शर्मा ने अपनी मधुर स्वर से गीत गाकर समां बॉध दिया। मंच संचालन का कार्य शेखरसिंह द्वारा किया गया। इस अवसर पर कमल कर्माकर , रश्मि शर्मा, लवलीन गॉधाी, पूर्व एल्डरमेन एस.मुर्ति, उदयनाथ साहु जी तथा अन्य भाई बहन उपस्थित थे।